اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ

आप उस किताब की तिलावत करते रहिए जो आप की तरफ़ वही की गई है और नमाज़ क़ाइम कीजिए।

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ

यक़ीनन नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह का ज़िक्र

اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ

सब से बड़ी चीज़ है। और अल्लाह जानता है वो जो तुम करते हो। और बेहतर अन्दाज़ के सिवा

الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۖۗ اِلَّا الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ

एहले किताब से झगड़ा मत करो। मगर वो जो उन में से ज़ालिम हैं

وَقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِالَّذِیْٓ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَاُنْزِلَ اِلَیْكُمْ

और यूँ कहो हम ईमान लाए हैं उस किताब पर जो हमारी तरफ़ उतारी गई और जो तुम्हारी तरफ उतारी गई

وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾

और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के ताबेदार हैं।

وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَیْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ

और इसी तरह हम ने आप की तरफ ये किताब उतारी। फिर वो जिन को हम ने किताब दी

یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ یُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا یَجْحَدُ

वो उस पर ईमान रखते हैं। और उन लोगों में से कुछ उस पर ईमान रखते हैं। और हमारी आयतों का

بِاٰیٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ

इन्कार नहीं करते मगर जो काफ़िर हैं। और आप इस से पेहले न कोई किताब तिलावत

مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِیَمِیْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾

करते थे और न अपने दाहने हाथ से लिखते थे, तब तो ज़रूर बातिलपरस्त शक में पड़ते।

بَلْ هُوَ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ

बल्के ये रोशन आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन को इल्म दिया गया।

وَمَا یَجْحَدُ بِاٰیٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَقَالُوْا

और हमारी आयात का ज़ालिम लोग ही इन्कार करते हैं। और केहते हैं

لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَیْهِ اٰیٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰیٰتُ

उस पर उस के रब की तरफ से मोअजिज़ात क्यूं नहीं उतारे गऐ? आप फरमा दीजिए के मोअजिज़ात तो सिर्फ

عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۵۰ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ

अल्लाह के पास हैं। और मैं तो सिर्फ साफ साफ डराने वाला हूँ। क्या उन के लिए ये काफ़ी नहीं है

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ

के हम ने आप की तरफ़ ये किताब उतारी जो उन पर तिलावत की जाती है। यक़ीनन उस में

لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝۵۱ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ ع

रहमत है और नसीहत है ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। आप फ़रमा दीजिए अल्लाह मेरे

وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

और तुम्हारे दरमियान काफ़ी गवाह है। अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ

और जो बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह के साथ कुफ्र करते हैं, यही लोग ख़सारा उठाने

الْخٰسِرُوْنَ ۝۵۲ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ

वाले हैं। और ये लोग आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं।

وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَاۗءَهُمُ الْعَذَابُ ۭ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً

और अगर वक़्त मुक़र्रर किया हुवा न होता तो उन के पास अज़ाब आ जाता। और अलबत्ता उन के पास वो अचानक ही

وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۵۳ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۭ

आ जाएगा और उन्हें मालूम भी नहीं होगा। ये आप से अज़ाब जल्दी तलब कर रहे हैं।

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ۝۵۴ۙ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ

और यक़ीनन जहन्नम काफिरों को घेरने वाली है। जिस दिन उन को अज़ाब ढांप लेगा

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَ يَقُوْلُ ذُوْقُوْا

उन के ऊपर से और पैरों के नीचे से और कहेगा के तुम

مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۵۵ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

अपने आमाल के मज़े लो। ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो!

اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ۝۵۶ كُلُّ نَفْسٍ

यक़ीनन मेरी ज़मीन वसीअ है, तो तुम मेरी ही इबादत करो। हर जानदार को

ذَاۗىِٕقَةُ الْمَوْتِ ۣ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ۝۵۷ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

मौत का मज़ा चखना है। फिर हमारी तरफ तुम्हें वापस आना है। और जो ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

और नेक अमल करते रहे, हम उन्हें ज़रूर जन्नत में से ठिकाना देंगे ऐसे बालाखानों (ऊपर वाली मन्ज़िलों)

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

में जिन के नीचे से नेहरें बेहती होंगी, जिन में वो हमेशा रहेंगे। अमल करने वालों का बदला कितना अच्छा है?

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾

वो लोग जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ

और कितने जानवर हैं जो अपनी रोज़ी उठा कर नहीं रखते। अल्लाह ही उन्हें और तुम्हें भी रोज़ी देता है।

وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

और अल्लाह सुनने वाला, इल्म वाला है। और अगर आप उन से पूछें किस ने आसमान

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ

और ज़मीन पैदा किए और किस ने चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है, तो ज़रूर वो बोलेंगे के

اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ

अल्लाह ने। फिर कहाँ वो लौटाए जाते हैं? अल्लाह रोज़ी कुशादा करता है जिस के लिए

يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चाहता है अपने बन्दों में से और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ को खूब

عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً

जानने वाला है। और अगर आप उन से सवाल करें के किस ने आसमान से पानी उतारा,

فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ

फिर उस के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, तो ज़रूर वो जवाब देंगे के अल्लाह ने।

ركوع ٦ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾

आप फ़रमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। लेकिन उन में से अक्सर समझते नहीं।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ

और ये दुन्यवी ज़िन्दगी नहीं है मगर दिल्लगी और खेल। और यक़ीनन आख़िरत

وقف لازم الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾

वाला घर वही (अस्ल) ज़िन्दगी है। काश ये समझते।

فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ
फिर जब वो सवार होते हैं कशती में तो अल्लाह को पुकारते हैं उसी के लिए इबादत को ख़ालिस करते

الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾
हुए। फिर जब अल्लाह उन्हें खुशकी की तरफ़ बचा कर ले आता है, तो फौरन ही वो शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾
ताके नाशुकरी करें उन नेअमतों में जो हम ने उन्हें दी। और ताके वो मज़े उड़ा लें। फिर आगे उन्हें पता चलेगा।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ
क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम ने अमन वाला हरम बनाया हालांके लोग उस के अतराफ़ से उचक

مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ
लिए जाते हैं? क्या फिर वो बातिल पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की नेअमतों की नाशुकरी

يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
करते हैं? और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ

كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ۭ اَلَيْسَ
घड़े या हक़ को झुठलाए जब वो उस के पास आए? क्या

فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا
जहन्नम काफिरों का ठिकाना नहीं? और वो लोग जिन्हों ने मुजाहदा किया हमारी खातिर तो हम उन्हें

لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾ ع
हमारे रास्तों की ज़रूर रहनुमाई करेंगे। और यक़ीनन अल्लाह एहसान करने वालों के साथ है।

رُكُوْعَاتُهَا ٦ (٣٠) سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ (٨٤) اٰيَاتُهَا ٦٠
और ६ रूकूअ हैं सूरह रूम मक्का में नाज़िल हुई उस में ६० आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ
अलिफ लाम मीम। रूमी उस ज़मीन के क़रीबी इलाक़े में मग़लूब हुए। और वो

مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۭ لِلّٰهِ
मग़लूब होने के बाद जल्द ही ग़ालिब होंगे। चन्द साल में। तमाम

الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَ يَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ

उमूर अल्लाह ही के क़ब्ज़े में हैं इस से पेहले भी और इस के बाद भी। और उस दिन ईमान वाले अल्लाह की

الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۴﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

नुसरत पर खुश हो जाएंगे। अल्लाह नुसरत करता है जिस की चाहता है। और वो ज़बर्दस्त है,

الرَّحِيْمُ ۙ﴿۵﴾ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ

निहायत रहम वाला है। ये अल्लाह के वादे के तौर पर है। अल्लाह अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करेगा,

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝﴿۶﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا

लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। वो दुन्यवी ज़िन्दगी के ज़ाहिर का इल्म

مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿۷﴾

रखते हैं। और वो आख़िरत से ग़ाफिल हैं।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ

क्या उन्हों ने सोचा नहीं अपने दिल में के अल्लाह ने आसमान और ज़मीन और उन के

وَ الْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

दरमियान की चीज़ें पैदा नहीं कीं मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा वक़्त तक के लिए?

وَ اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝﴿۸﴾

और यक़ीनन इन्सानों में से बहोत से अपने रब की मुलाक़ात का इन्कार करते हैं।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ

क्या वो ज़मीन में चले (फिरे) नहीं के देखते के उन लोगों का अन्जाम

عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً

कैसा हुवा जो उन से पेहले थे। जो उन से ज़्यादा क़ूव्वत वाले थे

وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَ عَمَرُوْهَاۤ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا

और उन्हों ने ज़मीन को जोता और आबाद किया था उस से ज़्यादा जितना इन्हों ने आबाद किया है

وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

और उन के पास उन के पैग़म्बर रोशन मोअजिज़ात ले कर आए थे? फिर अल्लाह ऐसा नहीं था के उन पर ज़ुल्म करता,

وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۹﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ

लेकिन वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। फिर बुरा करने वालों

الَّذِيْنَ اَسَآءُوا السُّوْٓآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا
का अन्जाम बहोत ही बुरा हुवा, इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह की आयात को झुठलाया और वो उन

بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ۝۱۰ اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ع ۱۰ ۲
के साथ मज़ाक़ करते थे। अल्लाह पेहली बार मख़्लूक़ पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा,

ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ۝۱۱ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
फिर उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी तो मुजरिम लोग

الْمُجْرِمُوْنَ۝۱۲ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآىِٕهِمْ شُفَعٰٓؤُا
मायूस रेह जाएंगे। और उन के लिए उन के शुरका में से सिफ़ारिश करने वाले भी नहीं होंगे

وَكَانُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ كٰفِرِيْنَ۝۱۳ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ
और वो अपने शुरका का इन्कार कर देंगे। और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी

يَوْمَىِٕذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ۝۱۴ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
उस दिन सब अलग अलग हो जाएंगे। फिर जो लोग ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ۝۱۵ وَاَمَّا الَّذِيْنَ
करते रहे तो वो बाग़ में होंगे, उन्हें खुश कर दिया जाएगा। और जिन्हों ने

كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓىِٕكَ
कुफ़्र किया और हमारी आयतों को और आखिरत के मिलने को झुठलाया, तो वो

فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ۝۱۶ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ
अज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। तो अल्लाह की तस्बीह करो जब

تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ۝۱۷ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ
शाम करो और जब सुबह करो। और उसी के लिए तमाम तारीफ़ें हैं आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ۝۱۸ يُخْرِجُ الْحَيَّ
में और सेपेहर के वक्त और जिस वक़्त तुम दोपहर करो। वही ज़िन्दा को मुर्दा

مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ
से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उस के खुश्क

الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ۝۱۹ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ ع ۲ ۹ ۵
हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। और इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और अल्लाह की निशानियों में से

اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝٢٠

ये है के उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर अब तुम बशर हो, फैल रहे हो।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के उस ने तुम्हारे लिए तुम ही (मियाँ बीवी) से जोड़ों को पैदा किया

لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ؕ

ताके तुम उन के पास सुकून पाओ और तुम्हारे दरमियान महब्बत और शफ़क़त रख दी।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ

यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह की निशानियों में से आसमानों

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَ اَلْوَانِكُمْ ؕ

और ज़मीन को पैदा करना है और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों का अलग अलग होना है।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ۝٢٢ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ

यक़ीनन उस में समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं। और अल्लाह की निशानियों में से तुम्हारा सोना है

بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ

रात में और दिन में और तुम्हारा तलाश करना है उस की रोज़ी को। यक़ीनन

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝٢٣ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ

उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो सुनती है। और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के वो तुम्हें

الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ

बिजली दिखाता है डराने के लिए और लालच के लिए, और वो आसमान से पानी बरसाता है, फिर उस के ज़रिए

بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है। यक़ीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٢٤ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ

ऐसी क़ौम के लिए जो सोचती है। और अल्लाह की निशानियों में से ये भी है के आसमान और ज़मीन अल्लाह

السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ

के हुक्म से क़ाइम हैं। फिर जब वो तुम्हें पुकारेगा एक ही पुकार

مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۝٢٥ وَلَهٗ مَنْ فِي

ज़मीन से तो उसी वक़्त तुम (ज़मीन से) निकल आओगे। और उस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

आसमानों और ज़मीन में हैं। तमाम उस के ताबेदार हैं। और वही अल्लाह है जो मख़लूक़

يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ

पेहली बार पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा और ये उस पर आसान है। और

الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

सब से ऊँची शाने (वहदानीयत) उसी के लिए है आसमानों और ज़मीन में। और वो ज़बर्दस्त है,

الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ ع ١٤

हिक्मत वाला है। उस ने तुम्हारे लिए मिसाल बयान की तुम्हारी जानों से। क्या तुम्हारे

مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ

ममलूक तुम्हारे शरीक हैं उस रोज़ी में जो हम ने तुम्हें दी

فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ

के तुम (और वो ममलूक) बराबर हो जाओ, के तुम उन से डरो तुम्हारे अपने से डरने की तरह?

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلِ اتَّبَعَ

इसी तरह हम आयतें तफ़सील से बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं। बल्के ये

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ

ज़ालिम अपनी ख़्वाहिशात के पीछे बग़ैर दलील के चल पड़े हैं। फिर कौन उस को रास्ता

مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَقِمْ

दिखा सकता है जिसे अल्लाह गुमराह कर दे? और उन के लिए कोई मददगार नहीं होगा। तो आप अपना चेहरा हर

وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ

तरफ़ से फेर कर इसी दीन की तरफ़ रखिए, अल्लाह की फ़ितरत (दीन) की तरफ़ जिस पर अल्लाह ने इन्सानों को पैदा

عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ

किया है। बदलना नहीं है अल्लाह के बनाए हुए को। ये सीधा दीन है।

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ

लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। उसी की तरफ़ रूजूअ करने वाले बनो

وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٣١﴾

और उसी से डरो और नमाज़ क़ाइम करो और मुशरिकीन में से मत बनो।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۭ

उन में से जिन्हों ने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और वो कई गिरोह बन गए। हर फ़िरक़ा

بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٣٢ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا

उसी पर ख़ुश है जो उस के पास है। और जब इन्सानों को ज़रर पहोंचता है तो वो अपने रब को

رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً

पुकारते हैं उसी की तरफ़ रूजूअ करते हुए, फिर जब वो उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत चखाता है

اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝٣٣ لِيَكْفُرُوْا

तो फ़ौरन उन में से एक जमाअत अपने रब के साथ शरीक ठेहराने लगती है। ताके वो नाशुकरी करें

بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۟ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣٤ اَمْ اَنْزَلْنَا

उन चीज़ों की जो हम ने उन्हें दीं। फिर तुम मज़े उड़ा लो, फिर तुम्हें मालूम हो जाएगा। या हम ने उन

عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ۝٣٥

पर कोई दलील उतारी है, जो ताईद करती हो उन के इरतिकाबे शिर्क की?

وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَاِنْ تُصِبْهُمْ

और जब हम इन्सानों को रहमत चखाते हैं तो वो उस पर ख़ुश होने लगते हैं। और जब उन्हें मुसीबत

سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۝٣٦

पहोंचती है उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे हैं तो फ़ौरन वो मायूस हो जाते हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

क्या उन्हों ने देखा नहीं के अल्लाह रोज़ी कुशादा और तंग करते हैं जिस के लिए चाहते हैं?

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٣٧ فَاٰتِ

यक़ीनन उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। तो तुम

ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ

रिश्तेदारों को और मिस्कीन और मुसाफिर को उस का हक़ दो। ये

خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं। और यही लोग

الْمُفْلِحُوْنَ ۝٣٨ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟ فِيْٓ اَمْوَالِ

फलाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताके वो बढ़े लोगों के मालों

النَّاسِ فَلَا يَرۡبُوۡا عِنۡدَ اللّٰهِ ۚ وَمَاۤ اٰتَيۡتُمۡ مِّنۡ زَكٰوةٍ

में, तो वो अल्लाह के नज़दीक़ तो बढ़ता नहीं। और जो ज़कात देते हो

تُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُضۡعِفُوۡنَ ۝۳۹ اَللّٰهُ

अल्लाह की रज़ा तलब करते हुए तो यही लोग दुगना करने वाले हैं। अल्लाह

الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ ثُمَّ رَزَقَكُمۡ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ يُحۡيِيۡكُمۡ ؕ

ने तुम्हें पैदा किया, फिर उस ने तुम्हें रोज़ी दी, फिर वो तुम्हें मौत देगा, फिर वो तुम्हें ज़िन्दा करेगा।

هَلۡ مِنۡ شُرَكَآئِكُمۡ مَّنۡ يَّفۡعَلُ مِنۡ ذٰلِكُمۡ

क्या तुम्हारे शुरका में से कोई हैं जो इस में से कुछ भी कर

مِّنۡ شَىۡءٍ ؕ سُبۡحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ۝۴۰ ظَهَرَ الۡفَسَادُ ع ۴

सकते हों? अल्लाह पाक है और बरतर है उन चीज़ों से जिन्हें वो शरीक ठेहराते हैं। फ़साद फैल गया

فِى الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ بِمَا كَسَبَتۡ اَيۡدِى النَّاسِ لِيُذِيۡقَهُمۡ

खुशकी और तरी में उन आमाल की बदौलत जो इन्सानी हाथों ने किए, ताके अल्लाह

بَعۡضَ الَّذِىۡ عَمِلُوۡا لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ۝۴۱ قُلۡ سِيۡرُوۡا

उन के कुछ आमाल की उन्हें सज़ा चखाए ताके वो बाज़ आ जाएं। आप फरमा दीजिए के तुम

فِى الۡاَرۡضِ فَانۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ

ज़मीन में चलो, फिर देखो के उन लोगों का अन्जाम कैसा हुवा जो उन से

مِنۡ قَبۡلُ ؕ كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّشۡرِكِيۡنَ ۝۴۲ فَاَقِمۡ وَجۡهَكَ

पेहले थे। उन में से अक्सर मुशरिक थे। तो आप अपना चेहरा सीधा रखिए

لِلدِّيۡنِ الۡقَيِّمِ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يَّاۡتِىَ يَوۡمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ

उस सीधे दीन की तरफ इस से पेहले के वो दिन आ जाए जिस के टलने का कोई इम्कान नहीं

مِنَ اللّٰهِ يَوۡمَئِذٍ يَّصَّدَّعُوۡنَ ۝۴۳ مَنۡ كَفَرَ فَعَلَيۡهِ

अल्लाह की तरफ से, उस दिन वो सब अलग अलग हो जाएंगे। जो कुफ्र करेगा तो उसी के ज़िम्मे उस के

كُفۡرُهٗ ۚ وَمَنۡ عَمِلَ صَالِحًا فَلِاَنۡفُسِهِمۡ يَمۡهَدُوۡنَ ۝۴۴

कुफ्र का वबाल पड़ेगा। और जो नेक अमल करेगा तो अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए वो तय्यारी कर रहे हैं।

لِيَجۡزِىَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنۡ فَضۡلِهٖ ؕ

ताके अल्लाह ईमान वालों को और उन को जिन्हों ने नेक अमल किए अपने फ़ज़्ल से बदला दे।

اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ

यक़ीनन अल्लाह काफिरों से महब्बत नहीं करते। और अल्लाह की निशानियों में से ये है के वो हवाएं

الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ

भेजता है बशारत देने वाली बना कर और ताके वो तुम्हें अपनी कुछ रहमत का मज़ा चखाए और ताके

الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ

कशती चले अल्लाह के हुक्म से और ताके तुम उस का फ़ज़्ल तलब करो और ताके तुम

تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا

शुक्र करो। यक़ीनन हम ने आप से पेहले पैग़म्बर भेजे

اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ

उन की क़ौम की तरफ, फिर वो उन के पास रोशन मोअजिज़ात ले कर आए, फिर हम ने मुजरिमों से

اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

इन्तिक़ाम लिया। और हम पर लाज़िम है ईमान वालों की मदद करना। अल्लाह ही है जो

يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ

हवाएं भेजता है, फिर वो बादलों को उड़ाती हैं, फिर उस को आसमान में फैलाता है जैसे

يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ

चाहता है, और उस को अलग अलग टुकड़े बना देता है, फिर तुम मेंह को देखोगे जो उस के दरमियान से

مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ

निकलती है। फिर जब वो उस को पहोंचाता है जिसे चाहता है अपने बन्दों में से

اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ

तब वो खुश हो जाते हैं। और यक़ीनन इस से पेहले के

اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾ فَانْظُرْ

उन के ऊपर ये बारिश बरसाई जाए वो बिलकुल नाउम्मीद थे। फिर आप देखिए अल्लाह

اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

की रहमतों के निशानात की तरफ के कैसे अल्लाह ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा करता है।

اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾

यक़ीनन वो मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है। और वो हर चीज़ पर कुदरत वाला है।

وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ

और अगर हम तूफानी हवा भेजें, फिर वो खेती को ज़र्द देख लें, तो ज़रूर उस के बाद वो नाशुकरी

يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾ فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ

करने लगें। यक़ीनन आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और आप बेहरे को पुकार नहीं

الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ

सुना सकते जब के वो पुश्त फेर कर भागे भी। और आप अन्धों को उन की गुमराही से रास्ता

عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا

नहीं दिखा सकते। आप तो सिर्फ उसी को सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं,

فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ع ١٥

फिर वो ताबेदारी करते हैं। अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया कमज़ोरी से,

ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ

फिर उस ने कमज़ोरी के बाद क़ूव्वत दी, फिर क़ूव्वत के

مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ

बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया। अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। और वो

الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ

इल्म वाला, क़ुदरत वाला है। और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी तो मुजरिम लोग

الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا

क़स्में खाएंगे के वो एक घड़ी से ज़्यादा नहीं ठेहरे। इसी तरह ये हक़ से

يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ

लौटाए जाते थे। और उन लोगों ने कहा जिन को इल्म और ईमान दिया गया के

لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهٰذَا يَوْمُ

यक़ीनन तुम अल्लाह की किताब के ऐतेबार से ठेहरे हो क़ब्रों से उठाए जाने के दिन तक। तो ये क़ब्रों से

الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ

उठाए जाने का दिन है, लेकिन तुम जानते नहीं थे। फिर उस दिन

لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾

उन ज़ालिमों को उन की माज़िरत नफ़ा नहीं देगी और न उन से मुआफी तलब की जाएगी।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ

यक़ीनन हम ने इन्सानों के लिए इस क़ुरआन में हर मिसाल बयान की है।

وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا

और अगर आप उन के पास मोअजिज़ा ले भी आएं तब भी काफिर लोग कहेंगे

اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ۝٥٨ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ

बस! तुम तो झूठे हो। इसी तरह अल्लाह मुहर लगा देता है उन

عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٩ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ

लोगों के दिलों पर जो समझते नहीं। इस लिए आप सब्र कीजिए, यक़ीनन अल्लाह का वादा

اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ۝٦٠ ع ٧

सच्चा है और आप से सब्र का दामन न छुड़ा दें (आपे से बाहर न करें) वो लोग जो यक़ीन नहीं रखते।

سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ (٥٧) (٣١)

اٰيَاتُهَا ٣٤ رُكُوْعَاتُهَا ٤

और ४ रूकूअ हैं सूरह लुक़मान मक्का में नाज़िल हुई उस में ३४ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝٢ هُدًى

अलिफ लाम मीम। ये हिकमत वाली किताब की आयतें हैं। हिदायत

وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۝٣ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ

और रहमत है उन नेकी करने वालों के लिए जो नमाज़ क़ाइम करते हैं

وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤

और ज़कात देते हैं और जो आखिरत पर भी यकीन रखते हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ

ये अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं और यही लोग

الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ

फलाह पाने वाले हैं। और उन लोगों में से एक वो भी है जो अल्लाह से ग़ाफिल करने वाली कहानियाँ

الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ

खरीदता है ताके वो बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे।

وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٦

और वो राहे ख़ुदा को मज़ाक़ बनाता है। यही हैं जिन के लिए रूस्वा करने वाला अज़ाब है।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ

और जब हमारी आयतें उस पर तिलावत की जाती हैं तो वो तकब्बुर से मुंह फेर लेता है गोया के

لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ

उस ने सुना ही नहीं गोया उस के कान में डाट है। तो आप उसे दर्दनाक अज़ाब की बशारत

اَلِيْمٍ ۝٧ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

सुना दीजिए। यक़ीनन वो लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे उन के लिए

جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝٨ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ

जन्नाते नईम हैं। जिन में वो हमेशा रहेंगे। अल्लाह ने सच्चा वादा फरमाया है।

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ

और अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उस ने आसमान पैदा किए बग़ैर सुतून के

تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ

जिन को तुम देख सको और उस ने ज़मीन में पहाड़ रख दिए के वो तुम्हें ले कर हिलने न लगे

وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ؕ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ

और उस ने ज़मीन में हर क़िस्म के जानवर फैला दिए। और हम ने आसमान से पानी

مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝١٠ هٰذَا خَلْقُ

उतारा, फिर हम ने उस में नबातात के खूबसूरत जोड़े उगाए। ये अल्लाह की मखलूक़

اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ

है, तो मुझे दिखाओ के जो अल्लाह के अलावा हैं उन लोगों ने क्या पैदा किया?

بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝١١ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ ع ١٤

बल्के ये ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। यक़ीनन हम ने लुक़मान को हिकमत

الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ

दी के अल्लाह का शुक्र अदा करो। जो शुक्र करेगा तो सिर्फ अपने ज़ाती फाइदे के लिए

لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝١٢ وَاِذْ

करेगा। और जो नाशुकरी करेगा तो यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। और जब

وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم

قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ
लुक़मान (अलैहिस्सलाम) ने अपने बेटे से कहा जब वो उसे नसीहत कर रहे थे ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक मत ठेहरा।

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾ وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ
यक़ीनन शिर्क बहोत बड़ा ज़ुल्म है। और हम ने इन्सान को उस के वालिदैन के मुतअल्लिक़

بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ
हुक्म दिया के उस की माँ ने उस को पेट में उठाया है कमज़ोरी दर कमज़ोरी, और उस का दूध छुड़ाना

النصف

فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾
दो साल के अन्दर होता है, के तू मेरा और अपने वालिदैन का शुक्रगुज़ार रेह। मेरी ही तरफ लौटना है।

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ
और अगर वालिदैन तुझे मजबूर करें इस पर के तू मेरे साथ शरीक ठेहराए ऐसी चीज़ को जिस की तेरे पास कोई

عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫
दलील नहीं, तो तू उन का केहना न मानना, लेकिन उन के साथ रेहना दुन्या में उर्फ के मुताबिक़।

وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
और उन लोगों के रास्ते पर चलना जो मेरी तरफ रूजूअ होते हैं, फिर मेरी ही तरफ तुम्हें लौट कर आना है,

فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ
फिर मैं तुम्हें बताऊँगा जो अमल तुम करते थे। ऐ मेरे बेटे! यक़ीनन अगर राई

مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ
के दाने के बराबर भी कोई चीज़ हो, फिर वो किसी चटान में हो

اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ
या आसमानों या ज़मीन में हो, तब भी अल्लाह उस को ले आएगा।

اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ
यक़ीनन अल्लाह बारीकबीन, बाखबर है। ऐ मेरे बेटे! तू नमाज़ क़ाइम कर और नेकी का

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى
हुक्म कर और बुराई से रोक और सब्र कर उन मुसीबतों पर

مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ
जो तुझे पहोंची। यक़ीनन ये ऐसे उमूर में से है जिन का अज़्म किया जाता है। और तू अपना रूख्सार लोगों

خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ
से मत फेर और ज़मीन में अकड़ कर मत चल।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۙ﴿۱۸﴾ وَاقْصِدْ
यक़ीनन अल्लाह हर तकब्बुर करने वाले, फख्र करने वाले से महब्बत नहीं करता। और दरमियानी

فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ
चाल इख्तियार कर और अपनी आवाज़ पस्त रख। यक़ीनन सब से

الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿۱۹﴾ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ ع ۱۱
बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है। क्या तुम ने देखा नहीं के अल्लाह ने

سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
तुम्हारे ताबेअ कर दीं वो चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं

وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ
और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतों की वुस्अत फरमा दी है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى
और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं इल्म और हिदायत

وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿۲۰﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا
और रोशन किताब के बग़ैर। और जब उन से कहा जाता है के तुम उस हिदायत की

مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है, तो केहते हैं के बल्के हम तो उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने हमारे

اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ
बाप दादा को पाया। क्या अगर्चे शैतान उन को बुला रहा हो दोज़ख के अज़ाब की

السَّعِيْرِ ﴿۲۱﴾ وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ
तरफ? और जो अपना चेहरा अल्लाह के ताबेअ कर देगा और वो

مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ
नेकोकार हो, तो उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया।

وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۲۲﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ
और अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर का अन्जाम है। और जो कुफ्र करता है तो उस का कुफ्र आप को ग़मगीन

كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

न करे। हमारी ही तरफ उन को लौटना है, फिर हम उन्हें बता देंगे जो अमल उन्हों ने किए थे। यक़ीनन अल्लाह

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ

दिलों का हाल खूब जानते हैं। हम उन्हें थोड़ा फ़ाइदा उठाने देंगे, फिर ज़बर्दस्ती ले जाएंगे

اِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ

सख्त अज़ाब की तरफ। और अगर आप उन से सवाल करें के किस ने आसमान

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ

और ज़मीन पैदा किए, तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। आप फरमा दीजिए के तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।

بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

बल्के उन में से अक्सर जानते नहीं। अल्लाह की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन

وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّ مَا

में हैं। यक़ीनन अल्लाह बेनियाज़ है, क़ाबिले तारीफ है। और अगर वो दरख्त जो

فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ

ज़मीन में हैं वो क़लम बन जाएं और समन्दर उस के लिए रौशनाई बन जाए, उस के बाद

بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ

सात समन्दर और भी हों, तब भी अल्लाह के कलिमात खत्म नहीं होंगे। यक़ीनन

اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا

अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। तुम्हारा पैदा किया जाना और तुम्हारा कब्रों से उठना नहीं है मगर

كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

एक जान (पैदा करने) के मानिन्द। यक़ीनन अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। क्या आप ने देखा नहीं के

اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَ

अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है और

سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۙ كُلٌّ يَّجْرِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

उस ने चाँद और सूरज को काम में लगा रखा है। सब के सब चलते रहेंगे एक वक़्ते मुक़र्ररा तक

وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ

और ये के अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है। ये इस वजह से के अल्लाह

هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ
ही हक़ है और ये के अल्लाह के सिवा जिन को ये पुकारते हैं वो बातिल हैं

وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ ع ١٢
और ये के अल्लाह बरतर है, बड़ा है। क्या आप ने देखा नहीं के कशती

تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ
चलती है समन्दर में अल्लाह की नेअमत से ताके वो तुम्हें अपनी कुछ निशानियाँ दिखाए।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾ وَاِذَا
यक़ीनन इस में अलबत्ता निशानियाँ हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब उन्हें मौज

غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
ढांप लेती है सायबानों की तरह, तो वो अल्लाह को पुकारने लगते हैं उस के लिए इबादत को खालिस करते हुए।

لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ
फिर जब वो उन को बचा कर खुशकी की तरफ ले आता है तो उन में से कुछ मयानारवी इखतियार करने वाले होते हैं।

وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾ يٰٓاَيُّهَا
और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता मगर जो गद्दार, नाशुकरा है। ऐ

النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ
इन्सानो! तुम अपने रब से डरो और तुम डरो उस दिन से जिस दिन कोई वालिद

وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ
अपनी औलाद के काम नहीं आएगा और न औलाद अपने वालिद के कुछ भी काम

وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
आ सकेगी। यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٣٣﴾
धोके में न डाले। और तुम्हें अल्लाह से धोके में न रखे धोकेबाज़ (शैतान)।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ
यक़ीनन अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है। और वही बारिश को उतारता है।

وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا
और जानता है उसे जो बच्चादानियों में है। और कोई शख्स नहीं जानता के

تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ

कल क्या करेगा? और कोई शख़्स नहीं जानता के किस ज़मीन में

ع ٤ ١٣ تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝٣٤

मरेगा? यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, बाख़बर है।

اٰيَاتُهَا ٣٠ سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ (٣٢) (٧٥) رُكُوْعَاتُهَا ٣

और ३ रूकूअ हैं सूरह सजदा मक्का में नाज़िल हुई उस में ३० आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

الٓمّٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ

अलिफ लाम मीम। इस किताब का उतारा जाना रब्बुल आलमीन की तरफ से है, इस में कोई

الْعٰلَمِيْنَ ۝٢ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ

शक नहीं। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने खुद इस को घड़ लिया है? बल्के ये हक़ है तेरे रब

رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ

की तरफ से ताके आप डराएं ऐसी क़ौम को जिन के पास आप से पेहले कोई डराने वाला नहीं आया

لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝٣ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

ताके वो राह पाएं। अल्लाह ही है जिस ने आसमानों और ज़मीन को

وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى

और उन चीज़ों को जो उन के दरमियान में हैं छे दिन में पैदा किया है, फिर वो

عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا

अर्श पर मुस्तवी हुवा। तुम्हारे लिए उस के सिवा कोई मददगार और सिफारिशी

شَفِيْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ

नहीं है। क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? वो तमाम उमूर की तदबीर करता है आसमान

السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ

से ज़मीन तक, फिर वो उस की तरफ चढ़ते हैं ऐसे दिन में

كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝٥ ذٰلِكَ

जिस की मिक़दार तुम्हारी गिन्ती के ऐतेबार से एक हज़ार साल है। वो

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ

ग़ाइब और हाज़िर का जानने वाला है, ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। वो अल्लाह

اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ

जिस ने हर चीज़ को अच्छा बनाया जो भी उस ने पैदा किया, और इन्सान को पेहले मिट्टी से

مِنْ طِيْنٍ ۚ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ

पैदा किया। फिर उस ने उस की नस्ल को एक हक़ीर पानी के खुलासे से

مَّهِيْنٍ ۚ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ

बनाया। फिर उस को पूरा पूरा बनाया, फिर उस में अपनी रूह फूंक दी और

لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾

उस ने तुम्हारे कान, आँख और दिल बनाए। बहोत कम तुम शुक्र अदा करते हो।

وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِى الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ

और ये केहते है क्या जब हम गुम हो जाएंगे ज़मीन में, तब हम नई पैदाइश में ज़िन्दा कर के उठाए

جَدِيْدٍ ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ

जाएंगे? बल्के वो अपने रब की मुलाक़ात ही का इन्कार कर रहे हैं। आप फरमा दीजिए

يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ

के तुम्हें वफात देगा मौत का वो फरिशता जो तुम पर मुतअय्यन है, फिर

اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۚ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ ع ١٤

तुम अपने रब की तरफ लौटाए जाओगे। और काश के आप देखते जब ये मुजरिम

نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا

अपने सर अपने रब के सामने झुकाए हुए होंगे। (वो कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम ने

وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾

देख लिया और सुन लिया, तो तू हमें (दुन्या में) वापस भेज दे के हम नेक अमल करें, हमें यक़ीन आ गया।

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ

और अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उस की हिदायत दे देते, लेकिन मेरी जानिब से क़ौले सादिक़

الْقَوْلُ مِنِّىْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ

सादिर हो चुका है के मैं जिन्नात और इन्सानों, दोनों से जहन्नम को ज़रूर

اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ
भरूँगा। तो तुम अज़ाब चखो इस वजह से के तुम ने अपने इस दिन की मुलाक़ात को भुला दिया था।

اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ
हम ने भी तुम्हें भुला दिया और अपने करतूत के इवज़ हमेशा का अज़ाब

تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا
चखो। हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं के जब उन्हें उन आयात के ज़रिए नसीहत

بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا
की जाती है, तो सजदे में गिर जाते हैं और अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और वो

يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ السجدة تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ السجدة ٩
बड़ाई नहीं चाहते। उन के पेहलू ख़्वाबगाहों से अलग रेहते हैं,

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾
वो अपने रब को खौफ व उम्मीद से पुकारते हैं। और हमारी दी हुई रोज़ी में से खर्च करते हैं।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ
फिर कोई शख़्स नहीं जानता के आँखों की ठन्डक में से क्या उस के लिए छुपाया गया है,

جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا
उन के आमाल के बदले में। क्या फिर वो शख़्स जो मोमिन हो

كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؕ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وقف غفران
उस शख़्स की तरह हो सकता है जो बदकार है? दोनों बराबर नहीं हो सकते। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۫ نُزُلًا ۢ بِمَا
और नेक अमल करते रहे, उन के लिए रेहने की जन्नतें हैं। मेहमानी के खातिर उन आमाल के

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ
बदले में जो वो करते थे। और अलबत्ता जो बदकार हैं तो उन का ठिकाना दोज़ख है।

كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا
जब कभी वहाँ से निकलने का इरादा करेंगे तो उस में दोबारा लौटा दिए जाएंगे

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ
और उन से कहा जाएगा के उस आग के अज़ाब को चखो जिस को तुम झुठलाया

تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى

करते थे। और हम उन्हें क़रीबी अज़ाब में से चखाएंगे

دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ

बड़े अज़ाब से पेहले शायद वो बाज़ आ जाएं। और उस से ज़्यादा

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ

ज़ालिम कौन होगा जिसे उस के रब की आयात के ज़रिए नसीहत की जाए, फिर वो उस से ऐराज़ करे?

اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى ع ١٥

यक़ीनन हम मुजरिमों से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को

الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ

किताब दी, तो आप उस की मुलाक़ात के बारे में शक में न रहिए, और हम ने

هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً

उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हम ने उन में से पेशवा बनाए

يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا

जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे जब उन्हों ने सब्र किया। और वो हमारी आयतों पर यक़ीन

يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ

रखते थे। यक़ीनन तेरा रब उन के दरमियान क़यामत के दिन फेसला करेगा

فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٢٥﴾ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

उन बातों में से जिन में वो इख़्तिलाफ कर रहे थे। क्या उन के लिए ये चीज़ हिदायत का बाइस नहीं हुई के

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ

हम ने उन से पेहले कितनी क़ौमों को हलाक किया जिन के मकानात में

فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٢٦﴾

ये चलते हैं? यक़ीनन उस में अलबत्ता निशानियाँ हैं। क्या फिर वो सुनते नहीं?

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ الْجُرُزِ

क्या उन्हों ने देखा नहीं के हम पानी को चलाते हैं बन्जर ज़मीन की तरफ,

فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ

फिर हम उस के ज़रिए खेती निकालते हैं जिस से उन के चौपाए और खुद वो भी खाते हैं।

الثلثة

أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَ يَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ
क्या फिर वो देखते नहीं? और ये पूछते हैं के ये फत्ह् कब है

إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ
अगर तुम सच्चे हो? आप फरमा दीजिए के फत्ह् के दिन काफिरों को उन का ईमान लाना

كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ
नफा नहीं देगा और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। इस लिए उन से आप ऐराज़ कीजिए

ركوع ٢
عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾
और मुन्तज़िर रहिए। यक़ीनन ये भी मुन्तज़िर हैं।

ركوعاتها ٩ (٣٣) سُورَةُ الْأَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ (٩٠) اٰياتها ٧٣

और ९ रूकूअ हैं सूरह अहज़ाब मदीना में नाज़िल हुई उस में ७३ आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ ۗ
ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! आप अल्लाह से डरिए और काफिरों और मुनाफिक़ों का केहना न मानिए।

إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١﴾ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ
यक़ीनन अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और उस की पैरवी कीजिए जो आप की तरफ आप के रब की

مِن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٢﴾
तरफ से वही किया जा रहा है। यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाखबर है।

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٣﴾ مَا جَعَلَ
और आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए। और अल्लाह कारसाज़ काफी है। अल्लाह ने किसी

اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّن قَلْبَيْنِ فِي جَوْفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ
शख्स के सीने में दो दिल नहीं बनाए। और तुम्हारी

أَزْوَاجَكُمُ اللَّائِي تُظَاهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ
बीवियों को जिन से तुम ज़िहार करते हो उन को तुम्हारी माँ नहीं बनाया।

وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُم
और तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारे हक़ीक़ी बेटे नहीं बनाया। ये तुम्हारी अपने मुंह से कही हुई

بِاَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ۝٤

बातें हैं। और अल्लाह हक़ केहता है और उसे सीधे रास्ते की रहनुमाई करता है।

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ

तुम उन को उन के बाप दादा की तरफ मन्सूब कर के पुकारो, ये अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इन्साफ वाली चीज़ है। फिर

لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۭ

अगर तुम उन के बाप दादा को नहीं जानते, तो वो दीन में तुम्हारे भाई हैं और तुम्हारे आज़ादकरदा गुलाम हैं।

وَ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ

और तुम पर कोई हरज नहीं है उस में जो तुम ग़लती कर बैठो,

وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا

लेकिन वो जिस का तुम दिल से इरादा करो। (ये ग़लत है।) और अल्लाह बख्शने वाला,

رَّحِيْمًا ۝٥ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

निहायत रहम वाला है। ये नबी ईमान वालों पर उन की जानों से भी ज़्यादा हक़ रखते हैं,

وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

और नबी की बीवियाँ उन की माएँ हैं। और रिश्तेदार उन में से एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार

بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ

हैं अल्लाह की किताब में ईमान वालों से और मुहाजिरीन से,

اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ۭ كَانَ ذٰلِكَ

मगर ये के तुम अपने दोस्तों के साथ उर्फ के मुताबिक़ कोई मुआमला करो। ये

فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝٦ وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ

किताब में लिखा हुवा है। और जब हम ने अम्बिया से उन का

مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى

अहद लिया और आप से और नूह और इब्राहीम और मूसा

وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۠ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ ۝٧

और ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम) से। और हम ने उन से पुख्ता अहद लिया।

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ

ताके अल्लाह सच्चों से उन की सच्चाई के मुतअल्लिक़ सवाल करे। और अल्लाह ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक

عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ ع ١٧

अज़ाब तय्यार कर रखा है। ऐ ईमान वालो! तुम याद करो अल्लाह की उस नेअमत को

عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا

जो तुम पर है जब तुम्हारे पास लशकर आए, फिर हम ने उन पर तूफ़ानी हवा

وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٩﴾

और ऐसे लशकर भेजे जिन को तुम ने नहीं देखा। और अल्लाह तुम्हारे आमाल देख रहे थे।

اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ

जब वो तुम्हारे पास आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से

وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ

और जब के आँखें फटी की फटी रेह गईं और दिल हलक़ तक पहोंच गए और तुम ने अल्लाह के

بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ﴿١٠﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا

साथ तरह तरह के गुमान किए। उस वक़्त ईमान वाले आज़माए गए और

زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿١١﴾ وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ

उन्हें सख़्त हिला दिया गया। और जब मुनाफ़िक़ मर्द और वो जिन के दिलों में

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗٓ

मर्ज़ है, केहने लगे हम से अल्लाह ने और उस के रसूल ने जो वादा किया था

اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰٓاَهْلَ

वो धोका ही था। और जब उन में से एक जमाअत केह रही थी के ऐ यसरब

يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ

वालो! तुम्हारे लिए ठेहेरने की जगह नहीं है, तो वापस लौट जाओ। और उन में से एक जमाअत नबीए अकरम

مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَمَا هِيَ

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इजाज़त तलब कर रही थी, वो केह रही थी के यक़ीनन हमारे घर खाली पड़े हैं, हालांके वो

بِعَوْرَةٍ ۛۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ ع ١٨ عند المتقدمين ١٢

खाली नहीं थे। वो सिर्फ भागना चाहते थे। और अगर (ये लशकर)

عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا

मदीना के अतराफ से उन पर दाखिल हो कर उन से कुफ़्र का मुतालबा करें तो वो कुफ़्र कर लेंगे,

وَمَا تَلَبَّثُوۡا بِهَاۤ اِلَّا يَسِيۡرًا ۱۴ وَلَقَدۡ كَانُوۡا عَاهَدُوا

और उस में सिर्फ थोड़ी ही देर करेंगे। यक़ीनन उन्हों ने अल्लाह से इस

اللّٰهَ مِنۡ قَبۡلُ لَا يُوَلُّوۡنَ الۡاَدۡبَارَ ؕ وَكَانَ عَهۡدُ اللّٰهِ

से पेहले भी वादा किया था के पीठ फेर कर नहीं भागेंगे। और अल्लाह के अहद का

مَسۡـُٔوۡلًا ۱۵ قُلۡ لَّنۡ يَّنۡفَعَكُمُ الۡفِرَارُ اِنۡ فَرَرۡتُمۡ

ज़रूर सवाल किया जाएगा। आप फरमा दीजिए के तुम्हें भागना हरगिज़ नफ़ा नहीं देगा अगर तुम भागोगे

مِّنَ الۡمَوۡتِ اَوِ الۡقَتۡلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوۡنَ اِلَّا قَلِيۡلًا ۱۶

मौत से या क़त्ल से और उस वक़्त तो फ़ाइदा नहीं उठा सकोगे मगर थोड़ा।

قُلۡ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ يَعۡصِمُكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ اِنۡ اَرَادَ بِكُمۡ

आप फ़रमा दीजिए के कौन है जो तुम्हें बचाएगा अल्लाह से अगर अल्लाह तुम्हारे साथ बुराई का

سُوۡٓءًا اَوۡ اَرَادَ بِكُمۡ رَحۡمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوۡنَ لَهُمۡ

इरादा करे या तुम पर महरबानी का इरादा करे? और वो अपने लिए अल्लाह के अलावा

مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ۱۷ قَدۡ يَعۡلَمُ اللّٰهُ الۡمُعَوِّقِيۡنَ

कोई कारसाज़ और मददगार नहीं पाएंगे। यक़ीनन अल्लाह ने मालूम कर लिया है तुम में से रोकने

مِنۡكُمۡ وَالۡقَآئِلِيۡنَ لِاِخۡوَانِهِمۡ هَلُمَّ اِلَيۡنَا ۚ

वालों को और अपने भाइयों से केहने वालों को के तुम हमारे पास आ जाओ।

وَلَا يَاۡتُوۡنَ الۡبَاۡسَ اِلَّا قَلِيۡلًا ۱۸ اَشِحَّةً عَلَيۡكُمۡ ۖۚ

और वो खुद लड़ाई में नहीं आते मगर थोड़ा। तुम पर बखीली करते हुए।

فَاِذَا جَآءَ الۡخَوۡفُ رَاَيۡتَهُمۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَيۡكَ تَدُوۡرُ

फिर जब खौफ आता है, तो आप उन को देखोगे के वो आप की तरफ तक रहे हैं, उन की आँखें

اَعۡيُنُهُمۡ كَالَّذِىۡ يُغۡشٰى عَلَيۡهِ مِنَ الۡمَوۡتِ ۚ

घूम रही हैं उस शख्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी तारी हो।

فَاِذَا ذَهَبَ الۡخَوۡفُ سَلَقُوۡكُمۡ بِاَلۡسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً

फिर जब खौफ चला जाता है तो वो आप को तेज़ ज़बानों से ताने देते हैं माल पर

عَلَى الۡخَيۡرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمۡ يُؤۡمِنُوۡا فَاَحۡبَطَ اللّٰهُ اَعۡمَالَهُمۡ ؕ

लालच करते हुए। ये ईमान ही नहीं लाए, फिर अल्लाह ने उन के आमाल ह़ब्त कर दिए।

وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۱۹﴾ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ

और ये अल्लाह पर आसान है। वो समझते हैं के लशकर अभी

لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ

गए नहीं। और अगर लशकर आ जाएं तो वो चाहेंगे के काश के वो

بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ۖ

(बाहर) देहातियों में रेहते, तुम्हारी ख़बरों के मुतअल्लिक़ पूछते रेहते।

۲ ع ۱۲ ۱۸ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۲۰﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ

और अगर वो तुम में होते भी तो क़िताल न करते मगर थोड़ा। यक़ीनन अल्लाह के

فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ

रसूल में बेहतरीन नमूना है उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और आख़िरी दिन से

وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿۲۱﴾ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ

उम्मीद रखता है और अल्लाह को बहोत ज़्यादा याद करता है। और जब ईमान वालों ने

الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

लशकर देखे, तो उन्हों ने कहा के ये वो है जिस का अल्लाह और उस के रसूल ने हम से वादा किया था

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا

और अल्लाह और उस के रसूल ने सच्चा वादा किया था। और इस चीज़ ने उन को ईमान और ताबेदारी में

وَّتَسْلِيْمًا ﴿۲۲﴾ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا

बढ़ा दिया है। ईमान वालों में से ऐसे मर्द हैं जिन्हों ने सच कर दिखाया

مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ

वो अहद जो उन्हों ने अल्लाह से किया था। फिर उन में से कुछ वो हैं जिन्हों ने अपना ज़िम्मा पूरा कर दिया और उन में

مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۫ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾ لِّيَجْزِىَ اللّٰهُ

से कुछ वो हैं जो मुन्तज़िर हैं। और उन्हों ने कोई तबदीली नहीं की। ताके अल्लाह सच्चों को

الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ

उन की सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ीन को अगर वो चाहे तो अज़ाब दे

اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۖ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۴﴾

या उन की तौबा क़ुबूल करे। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَكَفَى

और अल्लाह ने काफ़िरों को फेर दिया अपने ग़ुस्से में भरे हुए, वो कोई ख़ैर न ले जा सके। और अल्लाह

اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾

ईमान वालों की तरफ़ से क़िताल के लिए काफ़ी हो गया। और अल्लाह क़ूव्वत वाला, ज़बर्दस्त है।

وَ اَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

और एहले किताब में से जिन्हों ने उन की मदद की थी उन के क़िल्अों से उन को

مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ

नीचे उतारा और उन के क़ुलूब में रौब डाल दिया, एक जमाअत को तुम क़त्ल कर रहे थे

وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ

और एक जमाअत को तुम क़ैदी बना रहे थे। और अल्लाह ने तुम्हें उन की ज़मीन का वारिस बनाया और उन के घरों

وَ اَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ

और उन के मालों का वारिस बनाया, और ऐसी ज़मीन का तुम्हें वरिस बनाया जिस को तुम ने अभी रौंदा नहीं। और अल्लाह

شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ ع ٣ ١٩

हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। ऐ नबी! आप फरमा दीजिए आप की बीवियों से के अगर

اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ

तुम दुन्यवी ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो तुम आओ,

اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾ وَاِنْ كُنْتُنَّ

मैं तुम्हें मताअे दुन्या दे दूँ और मैं तुम्हें अच्छी तरह छोड़ दूँ। और अगर तुम

تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह और उस के रसूल और दारे आख़िरत चाहती हो तो यक़ीनन अल्लाह ने

اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ

तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अज्रे अज़ीम तय्यार कर रखा है। ऐ नबी की बीवियो!

مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا

तुम में से जो भी खुली बेहयाई करेगी, तो उसे दोहरा

الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾

अज़ाब दिया जाएगा। और ये अल्लाह पर आसान है।